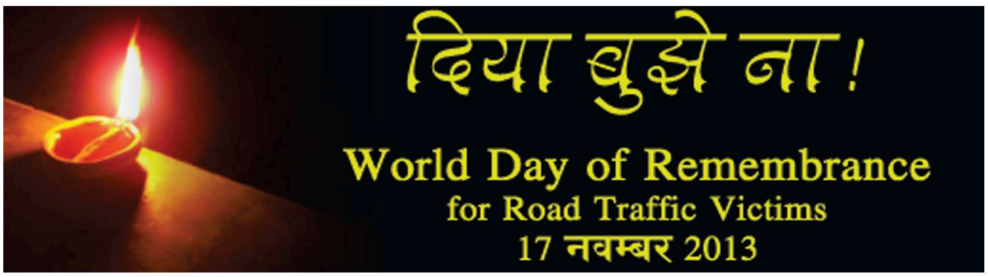

वर्तमान समय भौतिक उपलब्धियों की प्राप्ति की लालसा में विश्व भर में एक दूसरे से आगे बढ़ने की दौड़ में मानव अपने जीवन के महत्व को भी अनजाने में ही कमतर करता जा रहा है। शायद यही कारण है कि आज विश्वभर में सड़क दुर्घटनाओं में निरन्तर वृद्धि हो रही है। इन दुर्घटनाओं में लाखों लोगों की जान जाती है अथवा स्थायी या अस्थायी रूप से अपंग होते हैं और खरबों का आर्थिक नुकसान भी होता है। दुर्घटनाग्रस्त या आश्रितों को गहरा मानसिक आघात लगता है और उनकी सोच पर बहुत बुरा असर होता है। अनेक विषाद ग्रस्त हो जाते हैं और इतने निराश हो जाते हैं, जैसे कि इस दुनिया में कुछ बचा ही नहीं। वह जीते हुए भी ऐसे चलते हैं जैसे कि जी नहीं रहे बल्कि जीवन के बोझ को ढो रहे हैं।

सड़क दुर्घटनाओं में जो प्रभावित हो जाते हैं, उन्हें प्राथमिक स्तर पर तो कभी-कभी मदद मिलती है परन्तु मानसिक या सामाजिक स्तर पर जो असर होता है उससे मुक्ति के लिए बहुत कम मदद मिलती है। उस व्यक्ति तथा उनके परिजनों को भौतिक वस्तुओं की सहायता से भी ज्यादा महत्वपूर्ण होता है मानसिक सम्बल। यह मानसिक सम्बल आध्यात्मिक शक्तियों से सम्पन्न होने से ही मिल सकता है। जिन लोगों की मृत्यु हो जाती है, विशेष तौर पर उस व्यक्ति की आत्मा को शान्तिदान की और उसके परिजनों के आन्तरिक सशक्तिकरण की बहुत ज्यादा ज़रूरत होती है। उसके लिए चिकित्सकों द्वारा जो सहयोग मिलता है वह भी कई बार नाकाफी होता है। उन्हें काउन्सलिंग की भी ज़रूरत पड़ती है परन्तु शोध से यह स्पष्ट हुआ है कि मनोचिकित्सक की काउन्सलिंग से भी ज्यादा प्रभावी है-आध्यात्मिक काउन्सलिंग।

इसलिए आजकल अनेक मनोचिकित्सक भी अपने मरीजों को आध्यात्मिकता व मेडिटेशन का लाभ लेने के लिए प्रेरित करते हैं। इसलिए ऐसे कार्यक्रमों की जरूरत है जिनके द्वारा समाज का हर वर्ग मानव जीवन के महत्व को समझे। उन्हें यह प्रेरणा मिले कि इस अमूल्य जीवन की सुरक्षा के लिए हम भी प्रयास करें। ब्रह्माकुमारीज़ के यातायात एवं परिवहन प्रभाग द्वारा सुरक्षा जन-जागृति कार्यक्रम और चालकों के लिए कौशल विकास कार्यक्रम आयोजित किये जाते हैं। इनमें आन्तरिक सशक्तिकरण के लिए 'सेल्फ ऐमपावरमेंट थ्रू मेडिटेशन' एक विशेष कार्यक्रम है।

शांतिवन। लीडरशिप थ्रू होलिस्टिक इंटैलिजेंस सेमिनार का दीप प्रज्वलन द्वारा उद्घाटन करते हुए ए.जॉन, ए.पी.ओ, एस.एस मुरलीधरण, ब्र.कु. सुरेश, मैनेजमेंट ट्रेनर ब्र.कु. इ.वी. स्वामीनाथन, प्रो. आर. सुब्रामणियम तथा अन्य।

संयुक्त राष्ट्र ने विश्व स्तर पर सड़क दुर्घटनाओं से प्रभावित लोगों को पुन: सशक्त करने अथवा जो मृत्यु को प्राप्त कर चुके हैं उन्हें शान्ति दान देने के लिए या उनके परिजनों को मानसिक रूप से सशक्त करने के उद्देश्य से इस वर्ष 17 नवम्बर 2013 को 'वर्ल्ड डे ऑफ रिमेम्बरेंस फॉर रोड ट्रैफिक विक्टिम्स' घोषित किया है। यह नवम्बर मास का तीसरा रविवार है। यह भी विशेष संयोग है कि ब्रह्माकुमारीज़ पहले से ही हर मास के तीसरे रविवार को 'वर्ल्ड पीस मेडिटेशन' आयोजित करती है।

यातायात परिवहन प्रभाग ने इस 'वर्ल्ड डे ऑफ रिमेम्बरेंस' पर सड़क दुर्घटनाओं से प्रभावित लोगों की मदद के लिए विशेष कार्यक्रम निर्धारित किया है। इस वर्ष के कार्यक्रम की थीम है – 'दिया बुझे ना'। अर्थात् हम लोगों को सड़क यातायात को दुर्घटना मुक्त बनाने की प्रेरणा देंगे ताकि आत्मा रूपी दिया सदा जलता रहे। किसी भी व्यक्ति की सड़क दुर्घटना में मृत्यु ना हो। अत: सभी ब्राह्मण कुल भूषण अपने सेन्टर्स द्वारा ऐसे कार्यक्रम आयोजित करें जिनके माध्यम से खास उन आत्माओं की मदद करें जो सड़क दुर्घटनाओं से प्रभावित हुए हैं।

इन कार्यक्रमों में विशेष उन लोगों को आमंत्रित कर सकते हैं जो सड़क सुरक्षा संबंधी कार्य करने वाले एन.जी.ओ. के पदाधिकारी हैं; सड़क सुरक्षा संबंधी विभाग के निमित्त अधिकारी हैं; सामाजिक संस्थायें जो लोगों की मदद के कार्यक्रम करती हैं जैसेकि रोटरी क्लब, लॉयन्स क्लब आदि, उनके पदाधिकारी; जिनकी सड़क दुर्घटना में मृत्यु हुई या जो अपंग बने, उनके परिवार के सदस्यों को या उनको जो किसी न किसी प्रकार से दुर्घटनाग्रस्त हुए हैं। इन्हें आध्यात्मिक शक्तियों का लाभ लेने हेतु पुन: आने की व सहयोगी बनने की भी प्रेरणा दे सकते हैं।

मुम्बई-विले पार्ले। नवरात्री झांकी का उद्घाटन करने के पश्चात प्रसिद्ध अभिनेत्री भाग्यश्री, राइटर भावना सोमय्या, अभिनेत्री ग्रेसी सिंह, पुलिस इन्स्पेक्टर सुनैना, सिंगर आमिर शेख। साथ हैं ब्र.कु. योगिनी।

स्वीडन। विदेश यात्रा के दौरान पाण्डव भवन की राजयोगी शिक्षिका ब्र.कु.शशिप्रभा स्वीडन के स्टूडेन्ट्स के साथ ग्रुप फोटो में।

पटियाला। थापर यूनिवर्सिटी में कार्यक्रम के पश्चात श्री श्री रविशंकर को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु. राखी, ब्र.कु. जयश्री।

राजकोट। शांतिदूत यूथ साइकिल यात्रा के प्रस्थान हेतु हरी झंडी दिखाती हुई मेयर रक्षा बहन, ब्र.कु. आरती तथा अन्य।

धुरी। चैतन्य देवियों की झांकी का अवलोकन करने के पश्चात कांग्रेस नेत्री रूप कौर बाघरिया, रघुबीर चंद, ब्र.कु. मूर्ति, संजय कुमार, हंस राज गर्ग। साथ हैं ब्र.कु. सुनीता।

राउरकेला। लॉयन्स क्लब के गवर्नर पी.सी. नायक, शांतिदूत साइकिल यात्रा प्रोग्राम के दौरान। मोमेन्टो प्रदान करते हुए ब्र.कु. बिमला, ब्र.कु. ज्योत्सना, ब्र.कु. शिबाना रे, ब्र.कु. बानेश्वर तथा अन्य।

समर्थ क्षमा का आभूषण

मनुष्य के चरित्र की विशेषताओं में क्षमा का एक भाव आंतरिक गुण है। यदि कोई मनुष्य आपके साथ भूल करता है, चाहे किसी मजबूरी वश या फिर अज्ञानता वश, आपका परम कर्तव्य बन जाता है कि उसकी त्रुटियों को बिना चित्त पर धरे, पूर्ववत् प्रेम और सम्मानपूर्ण व्यवहार करते हुए हीनता या अपराध की महसूसता का बोध कराये बिना उसे क्षमा कर देना। कई लोग इसका गलत अर्थ लेते हैं। मान लीजिये कोई मनुष्य आपकी खून-पसीने की कमाई उड़ा ले जाये तो क्या आप उसका नाम थाने में दर्ज नहीं करवायेंगे? क्या आप उसे क्षमा करके अपनी मेहनत की कमाई पर पानी फिरता हुआ मूक दर्शक बनकर देखते रहेंगे? नहीं ... न। क्योंकि इसे विवेकवान व्यवहार कुशलता नहीं कहा जायेगा। आप इसके लिये अवश्य पुरूषार्थ करेंगे। हाँ, उसकी इन बुराइयों को कोसते हुए न तो अपना समय बर्बाद करेंगे और न ही अपना दिल जलाएंगे। यदि न्यायालय द्वारा वह दंड का भागी बनता है तो इसमें भी उसका ही कल्याण है। प्रथम तो उसके गलत कर्मों का निपटारा हो जाएगा। दूसरा, भविष्य में गलत आदत के निर्माण से वह बच जाएगा। इस तरह से आप उसके कल्याणकारी मित्र ही कहलाएंगे।

जीज़स का एक प्रसिद्ध प्रवचन है - "जो तुम्हारे एक गाल पर तमाचा मारे, अपना दूसरा गाल भी उसके आगे कर दो।" भावार्थ उनका यह था कि लज्जित होकर वह अपने कुकृत्य पर पश्चाताप करेगा और भविष्य में इस दुष्टता से बच जाएगा। परन्तु विवेकहीन लोगों पर इसका कोई असर नहीं पड़ता। इस संदर्भ में एक व्यवहारिक घटना याद आती है कि आपको क्षमा भाव को किस तरह से अपनाना है।

एक बार एक मस्त इसाई फकीर किसी चर्च में जीज़स के इसी वचन, 'जो तुम्हारे एक गाल...।। पर प्रवचन दे रहा था। सभा में एक दुष्ट प्रकृति का व्यक्ति भी बैठा था। उसने सोचा कि क्यों न इस फकीर की परीक्षा ली जाए जैसे कि परमात्मा ने उसे सबका परीक्षक नियुक्त किया हो। ऐसे कई लोग अपने को परीक्षक ही समझते हैं। हाँ, तो जैसे ही भाषण समाप्त हुआ, उस व्यक्ति ने जाकर फकीर के गाल पर एक झन्नाटेदार तमाचा रसीद कर दिया। फकीर तो हक्का-बक्का रह गया। परन्तु तत्क्षण उसे जीज़स के वचन की मर्यादा याद आ गई। उसने दूसरा गाल भी उस दुष्ट व्यक्ति के आगे कर दिया। उसने न आव देखा न ताव, दूसरे गाल पर भी ज़ोरदार थप्पड़ दे मारा।शेष पेज 9 पर